श्री गणपति

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

卐 ——— भूमिका ——— 卐

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी या सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प रहता है । देवताओंसे संबंधित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्मित होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है, जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है। इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें श्री गणपतिसे संबंधित, प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है। श्री गणपतिके विषयमें विस्तृत विवेचन सनातनके ग्रन्थ 'श्री गणपति' में दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येकको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

卐 ——— 卐

सनातनका लघुग्रन्थ **'श्री हनुमान'**

हनुमानजीके प्रति भक्तिभाव

वृद्धिंगत करने हेतु अवश्य पढें !

अनुक्रमणिका

ॐ	परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीका संक्षिप्त परिचय	५
ॐ	श्री गणपतिसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व	८
ॐ	भूमिका	९
१.	व्युत्पत्ति एवं अर्थ	१०
२.	कुछ अन्य नाम एवं उनका अर्थ	१०
३.	महागणपति	१४
४.	व्याप्ति	१५
५.	कार्य एवं विशेषताएं	१५
६.	युगके अनुसार अवतार	१७
७.	वाहन	१८
८.	मूर्तिकी कुछ विशेषताओंका भावार्थ	१९
९.	भूतलपर स्थान (स्वयम्भू श्री गणपति)	२३
१०.	उपासना	२४
११.	सार्वजनिक श्री गणेशोत्सव	५६